पृथ्वीराज चौहान द्वारा महोबा राज्य पर आक्रमण के कुछ ''ऐतिहासिक तथ्य

दिल्ली नरेश पृथ्वीराज चौहान एवं महोबा के चंदेलवंश के राजा परमार्दि (परमाल) के वंश ... में संक्षिप्त जानकारी देना समयोचित होगा।

ऐतिहासिक जानकारी के अनुसार पृथ्वीराज चौहान के वंश ने राजपूताना में शाकंभरी (... में कई शताब्दियों तक राज किया है इनकी राजधानी अजमेर रही है। इनमें दो नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय रहे हैं ... राजा विग्रहराज जिसने बारहवीं शताब्दी के मध्य तक राज किया। इस वंश का दूसरा सबसे शक्तिशाली उल्लेखनीय शासक पृथ्वीराज चौहान था जिसे अजमेर का राज्य उत्तराधिकार में मिला था। दिल्ली का राज्य पृथ्वीराज को उनके नाना (माता के पिता) से प्राप्त हुआ था। पृथ्वीराज के नाना के दो लड़कियाँ थीं जिनमें एक की उन्होंने गोविन्दचन्द्र के पुत्र (जयचन्द के पिता) के साथ व्याह दी थी तथा दूसरी लड़की को पृथ्वीराज के पिता को व्याह दी थी। इस प्रकार पृथ्वीराज तथा जयचन्द मौसेरे भाई थे। पृथ्वीराज के साहस वीरता तथा उच्चकोटि की युद्धनीति को देखते हुए उनके नाना ने दिल्ली का राज पृथ्वीराज को दे दिया था।

चंदेलवंश :-

महोबा के चंदेल राजवंश के सम्बन्ध में यद्यपि कोई अधिकारिक प्रमाण नहीं है तथापि आधुनिक इतिहासकारों ने इनके सम्बन्ध में जो जानकारी दी है वह इस प्रकार है :-

भारतीय इतिहास कोष के अनुसार – 'उनकी उत्पत्ति गोड़ों तथा भरों से हुयी है बाद में इनके हाथ सत्ता आ जाने पर इन्हें क्षत्रिय कहा जाने लगा। 9वीं शताब्दी के आरम्भ में नन्नुक चन्देल द्वारा इस वंश की स्थापना हुयी।

प्राचीन भारत के इतिहास लेखक के०सी श्रीवास्तव के अनुसार चंदेल अपना सम्बन्ध चन्द्रमा से जोड़ते हैं। एक अति प्राचीन 'दिग्विजय' नाम की पुस्तक जो चरखारी राजकीय प्रेम में सं0 1960 में प्रकाशित हुयी थी उसके अनुसार तथा राधाकृष्ण बुन्देली के अनुसार गहरवार राजा के पुरोहित हेमराज की अत्यन्त सुन्दर कन्या हेमवती पर ... अर्थात् चन्द्रमा मोहित हो गए तथा होमवती के विरोध के बाद भी संपर्क हो गया तथा चन्द्रब्रम्ह नाम ... हुआ। चन्द्रदेव अपने पुत्र चन्द्रब्रम्ह को आशीर्वाद देकर तथा हेमवती को आश्वस्त कर उसका वंश बहुत प्रतापी ... अपने लोक को चले गए इन्हीं चन्द्रब्रम्ह की 19वीं पीढ़ी में मदन वर्मा की सन् 1163 में मृत्यु के पश्चात् पांच वर्ष की ... में उनके पुत्र परमार्दि (परमाल) गद्दी पर बैठे।

लगभग सभी आधुनिक इतिहासकारों द्वारा चन्देल वंश की स्थापना नन्नुक देव से मानी जाती है तथा ... वंश में लगभग 5 पीढ़ी तक अर्थात् राहिल तथा इनके पुत्र हर्ष तक सभी प्रतिहार राजाओं के करद सामंत रहे हैं। ... पुत्र यशोवर्मन ने प्रतिहारों को विनिष्ट कर स्वतंत्र राज स्थापित किया। इस प्रकार व्यवहारिक दृष्टि से चन्देल वंश का पहला स्वतंत्र शासक यशोवर्मन हुआ जिसने सन् 930 से 950 तक राज किया।

चन्देल वंश के अंतिम राजा परमाल ने महोबा पर लगभग सन् 1163 से 1202 तक राज किया इसी ... सन् 1182 में दिल्ली नरेश पृथ्वीराज का महोबा पर आक्रमण जिसका परिणाम भारतवर्ष के इतिहासकारों के अनुसार निम्न है :-

पूर्व सांसद डॉ0 पं. विश्वनाथ शर्मा झाँसी द्वारा लिखित पुस्तक ''हमारे प्रेरक'' के पृष्ठ संख्या-4 पर पृथ्वीराज चौहान द्वारा चंदेलराज महोबा पर आक्रमण के संबंध में लिखा है :-

''ग्यारह सौ ब्यासी (1182) ई0 में जब पृथ्वीराज चौहान ने चंदेल वंश की महोबा में परास्त कर ... और जिसमें आल्हा, ऊदल, परमल वंश समाप्त हो गया जिसका शिलालेख ललितपुर जनपद के मदनपुर कस्बे से प्राप्त ... था

था जिसमें पृथ्वीराज के इस क्षेत्र की राजधानी महोबा को लूटने का विस्तार से वर्णन है। इसके बाद पृथ्वीराज द्वारा इस क्षेत्र का नामित शासक खंगार वंश का खेत सिंह हुआ।'' जो गढ़ कुठार में सासक वना जिसे बाद में बुन्देलों ने नष्ट किया

01. बुन्देलखण्ड का ऐतिहासिक मूल्यांकन (प्रथम भाग) के लेखक राधाकृष्ण बुन्देली वर्ष 1989 का प्रकाशन- बुन्देली जी ने लिखा है कि ''एक बार राजा परमाल शिकार खेलने गये उन्होंने मुढ़ियागिरा वर्तमान मंगलगढ़ (चरखारी किले का नाम) के निकट एक चीते का शिकार किया वहीं पर एक सिद्ध बाबा रहते थे उन्होंने परमाल को श्राप दिया कि वह साहसहीन हो जायेगा। उसी समय से परमाल डरपोक हो गए।'' उसने कभी युद्ध नहीं किया। (पृ0 55)

बुन्देली जी ने पृ0 56पर लिखा है ''वि0सं0 1239 में (सन् 1182) पृथ्वीराज से लड़ाई होने पर परमाल की पराजय हुयी। जिसमें धसान नदी के पश्चिम का भाग पृथ्वीराज के राज्य में चला गया। इसके बाद वि0सं0 1260 में कुतुबुद्दीन एबक ने चन्देल राज्य पर चढ़ाई की जिसमें परमाल कालिंजर के किले में हार गए और कुतुबुद्दीन के लिए किला छोड़ने को तैयार हो गए। मंत्री ने उसे ऐसा करने को मना किया न मानने पर मंत्री ने उन्हें मार डाला। (पृ0 56व 58)

02. इतिहास की एक अन्य पुस्तक ''ओरछा का इतिहास'' के लेखक ठाकुर लक्ष्मन सिंह गौर सन् 2001-02 का प्रकाशन (म0प्र0 शासन द्वारा मान्य) के अनुसार -

''परमाल देव महोबा पर पृथ्वीराज चौहान ने वि0सं0 1239 में आक्रमण किया इस युद्ध में आल्हा ऊदल इन्दल, बनाफर तथा मानजू सोलंकी, ब्रम्हा मलखान, राना गुलाब, मीरतालन, धौराय, डिमराय स्वर्गवासी हुए थे। परमाल कालिंजर में रहने लगा था।'' (पृ0 33)

03. भारत वर्ष का इतिहास (प्रथम भाग) लेखक के0वी0 रंगास्वामी आयंगकर मद्रास सन् 1936में प्रकाशित ''पांच वर्ष पूर्व उसने (पृथ्वीराज ने) अपनी ताकत चन्देल राजा परमादि को हराकर बुन्देलखण्ड तक बढ़ा ली थी।''

04. प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति लेखक - कृष्णचन्द्र श्रीवास्तव रीडर प्राचीन इतिहास, संस्कृति विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय से सम्बद्ध कालेज इलाहाबाद ''ज्ञात हुआ है कि पृथ्वीराज ने परमादि को कई युद्धों में बुरी तरह पराजित कर दिया। ज्ञात होता है कि आल्हा और ऊदल नामक चन्देल सेना के दो वीर सेना नायक थे जिन्होंने पृथ्वीराज के विरूद्ध लड़ते हुए अपनी जान गंवाई थी। पृथ्वीराज ने परमादि को पराजित कर महोबा पर अधिकार कर लिया।.....1203 ई0 में कुतुबुद्दीन ने परमार्दि देव को पराजित कर कालिंजर के दुर्ग पर अधिकार कर लिया। कालिंजर के दुर्ग में ही परमार्दि की मृत्यु हो गयी। फरिश्ता से पता चलता है कि उसके स्वयं के मंत्री अजय देव ने उसकी कायरता से चिढ़कर उसकी हत्या कर दी।

05. भारतीय इतिहास कोष (ए डिक्सनरी ऑफ इण्डियन हिस्ट्री का हिन्दी रूपान्तर) मूल लेखक सच्चिदानन्द भट्टाचार्य प्रकाशक-निदेशक उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ ''परमार्दि (अथवा परमाल) जैजाकभुक्ति का अंतिम चंदेल शासक जिसे एक महत्त्वपूर्ण स्वतंत्र राजा कहा जा सकता है। वह पांच वर्ष की अवस्था में सिंहासन पर बैठा और 1182 इ0 तक राज्य करता रहा जबकि पृथ्वीराज चौहान से युद्ध में पराजित हो गया। पृथ्वीराज ने उसकी राजधानी ध्वस्त कर दी। इस पराजय के बाद ही दिल्ली के सुल्तान कुतुबुद्दीन के नेतृत्व में मुसलमानों ने उसके राज्य पर आक्रमण कर दिया और कालिंजर का किला घेर लिया। परमार्दि को कालिंजर का किला शत्रुओं को सौंप देना पड़ा और सम्भवत: युद्धभूमि में वह मारा गया।''

उपरोक्त राष्ट्रीय स्तर के तथा कुछ अन्तराष्ट्रीय स्तर के विद्वान इतिहासकारों ने लिखा है कि पृथ्वीराज चौहान के महोबा आक्रमण के परिणाम स्वरूप महोबा के चंदेल राजा परमार्दि बुरी तरह से पराजित हुए थे तथा महोबा छोड़कर कालिंजर चले गए थे। जहाँ बाद में कुतुबुद्दीन एबक द्वारा कालिंजर पर चढ़ाई कर उन्हें किला छोड़ने पर बाध्य कर दिया

था वहीं पर उनकी हत्या कर दी गयी थी।

यहाँ यह स्पष्ट करना भी अनिवार्य हो गया है कि पृथ्वीराज चौहान की सेना ने महोबा पर न तो अकारण ही और न ही आल्हा गायन के अनुसार किसी राजकुमारी के डोलाहरण के कारण आक्रमण किया था। वरन इसके सम्बन्ध में लेख है कि दक्षिण के अभियान से चौहान की सेनाएं जब दिल्ली की ओर लौट रहीं थी तो उनकी एक सेना की घुड़सवार टुकड़ी ने गिरवां के पास (चंदेल राज सीमा में) एक रात पड़ाव किया जिसकी खबर चंदेल सैनिकों को लग गयी। उन्होंने पृथ्वीराज के इन सैनिकों के साथ अनुचित छेड़छाड़ कर दी और उनके घोड़ों को सताया। चौहान के सैनिकों द्वारा इसकी शिकायत करने पर दिल्ली के शासक ने क्रुद्ध होकर महोबा के चन्देलों पर कजलियों वाले दिन जब सारा नगर उत्सव मना रहा था चढ़ाई कर दी तथा परमार्दि को पराजित कर महोबा को तहस नहस कर दिया।

- पं0 खेमराज पाठक (ए.…)
चरखारी (उ०…)
मो०नं०-09452926…

✹✹✹✹✹

अनमोल वचन

इस तरह न कमाओ कि पाप हो जाए।
इस तरह न खर्च करो कि कर्ज हो जाए।
इस तरह न खाओ कि मर्ज हो जाए।
इस तरह न बोलो कि क्लेश हो जाए।
इस तरह न चलो कि देर हो जाए।
इस तरह न सोचो कि चिंता हो जाए।

जीवन में सफलता का मन्त्र–

समय का संयम्
वाणी का संयम्,
अर्थ का संयम्,
मन का संयम्।